जनामा पद ५१

(राग: कानडा - ताल: धुमाळी)

ये ग ये श्रीगुरु ब्रह्म स्फुरणे। चिन्मणि घनकिरणे। माये अज अनंत ज्ञानाभरणे। शतमुख शतचरणे। अनादि सादि सृष्टि दृष्टि भ्रम बंध मोक्ष श्रुतिवाक्यालंकरणे।।१।। आद्ये अससी निज निर्गुण धामीं सर्वांतर्यामीं। तूर्ये श्रमलीस या अद्भृत कर्मी वैरधर्म नियमीं। सर्वांतरीं नटसी त्रिपुटी चिद्भ्रमाधार मानमेय करणें।।२॥ विश्वे बीजमहद्भूताकाशे शिव जीवाभासे। विद्ये अमित ग्रंथि सूक्ष्मविकासे धीवृत्ति विलासे। भेदशुद्ध सांख्ययोग मिथ्या सकल स्वमतवाक्यालंकरणें।।३।। अमृते अस्ति भाति प्रिय जंजाले सत्ताऽलवाले। सुकृते सुख उन्मनि समाधि मूले सन्चित्सुख लीले। ब्रह्म उखर मृगजल मार्तांडे। व्यंके जय निर्विकल्पपूर्णे।।४।।